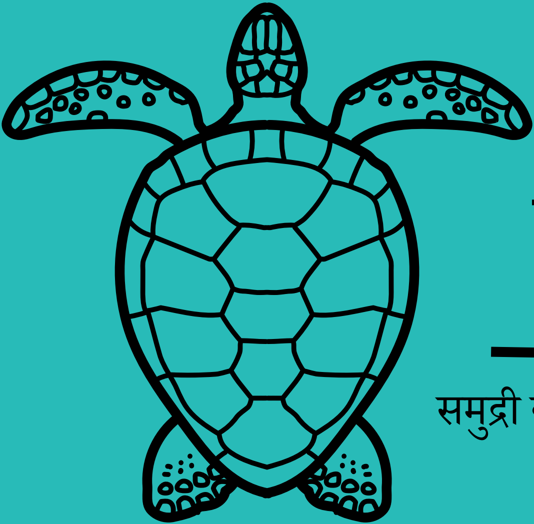

फील्ड गाइड

समुद्री कछुओं का फँसना और बचाव

ReefWatch
Marine Conservation

reefwatchindia.com

6360249764

projectcoordinator.tele@reefwatchindia.org

विषय सूची

पृष्ठ संख्या	विवरण
1.	समुद्री कछुए क्या हैं
2.	प्रजातियाँ
3.	शारीरिक संरचना
4.	पहचान
5.	विनियम और कानून
6.	फँसने (किनारे पर बहकर आने) के कारण
7.	रिपोर्टिंग / सूचना देना
9.	संभालना / प्रबंधन
11.	परिवहन
12.	मृत कछुए का निपटान
13.	पुनः छोड़ना (समुद्र में)
15.	दस्तावेजीकरण

साझेदार

REEFWATCH
MARINE CONSERVATION

ROHINI
NILEKANI
philanthropies

दस्तावेजीकरण

कछुए की शारीरिक जाँच प्रपत्र

कछुए का उपचार प्रपत्र

कछुए का पोस्ट मॉर्टम (मरणोपरांत जाँच) प्रपत्र

ईमेल- **vetcoordinator@reefwatchindia.org /**
projectcoordinator.tele@reefwatchindia.org (इन रिपोर्टों की प्रति प्राप्त करने के लिए संपर्क करें।).

समुद्री कछुए क्या हैं?

समुद्री कछुए मरीन रेप्टाइल्स होते हैं जो केलोनीआईडी (Cheloniidae) या डर्मोचेलिडे (Dermochelyidae) वर्ग से संबंधित हैं। ये अपनी लंबी आयु और प्रवासी व्यवहार के लिए जाने जाते हैं।

ये दुनिया भर के महासागरों में पाए जाते हैं और समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि ये सीग्रास बेड्स (Seagrass Beds) और कोरल रीफ़ (Coral Reefs) को स्वस्थ बनाए रखने में मदद करते हैं

भारत में ये पाँच प्रजातियाँ पाई जाती हैं: ऑलिव रिडले कछुआ, ग्रीन सी कछुआ, लेदरबैक कछुआ, हॉक्सबिल कछुआ और लॉगरहेड कछुआ

*जबकि केंप्स रिडले और फ्लैटबैक कछुए यहाँ कभी नहीं देखे गए

प्रजातियाँ

भारत के पूर्व और पश्चिम के समुद्री तटों पर ज़्यादातर ऑलिव रिडले कछुए मिलते हैं। इनके बाद ग्रीन कछुए, फिर हॉक्सबिल और सबसे कम लॉगरहेड कछुए दिखते हैं। लेदरबैक कछुए ज़्यादातर अंडमान–निकोबार में पाए जाते हैं और भारत की मुख्य भूमि पर बहुत कम दिखाई देते हैं।

ऑलिव रिडले
लेपिडोचेलिस ओलिवेसिया

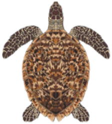

हॉक्सबिल
ऐरेटमोचेलिस इम्ब्रिकेटा

ग्रीन
चेलोनिया मिडास

लॉगर हेड
कैरेटा कैरेटा

लेदरबैक
डर्मोचेलिस कोरियासिया

समुद्री कछुए बहुत बड़े हो सकते हैं — अक्सर उनका वज़न 100 किलो से भी ज़्यादा होता है। अब तक का सबसे भारी कछुआ लेदरबैक था, जिसका वज़न लगभग 914 किलो था – यानी एक छोटी कार जितना भारी!
वहीं भारत में सबसे छोटा कछुआ ऑलिव रिडले है, जिसका वज़न ज़्यादा से ज़्यादा 50 किलो होता है – यानी एक बड़े बच्चे जितना।

Turtle-foundation.org

पुनः छोड़ना (समुद्र में)

हालाँकि समुद्री कछुए मज़बूत और सहनशील जीव होते हैं, लेकिन कई बार उन्हें तैरने (buoyancy) में समस्या हो जाती है। इसके सामान्य कारण प्लास्टिक खाना, जाल में फँसना, गंभीर संक्रमण या श्वसन तंत्र में पानी भर जाना हो सकता हैं। ऐसे कछुओं का पहले उपचार करना ज़रूरी होता है।

यदि अनुभवी पशु-चिकित्सकों द्वारा किसी कछुए को छोड़ने योग्य माना जाता है, तो उसकी पहचान के लिए बाएँ कंधे पर त्वचा के नीचे माइक्रोचिप लगाना चाहिए।

पुनः छोड़ना (समुद्र में)

किसी समुद्री कछुए को छोड़ने से पहले उसकी स्वास्थ्य जाँच करना बहुत ज़रूरी है, ताकि वह समुद्री वातावरण में सुरक्षित और स्वस्थ रह सके।

- **माइक्रोचिपिंग:** जो भी कछुए जाल में फँसे हों या घायल हुए हों, उन्हें समुद्र में छोड़ने से पहले उन पर माइक्रोचिप लगाना चाहिए, ताकि उनकी पहचान लंबे समय तक की जा सके।
- **छोड़ने का स्थान**: छोड़ने की जगह उस प्रजाति के अनुसार उपयुक्त होनी चाहिए। वहाँ का तापमान, प्राकृतिक आवास और भोजन की उपलब्धता सही होनी चाहिए।
- **मौसम की स्थिति**: छोड़ने से पहले मौसम, तापमान और समुद्र की स्थिति पर ध्यान दें, ताकि प्रक्रिया सुरक्षित हो।
- **छोड़ने का तरीका:** कछुए को नाव से या सीधे किनारे से समुद्र में छोड़ा जा सकता है।
- **सुरक्षा:** कछुए को छोड़ते समय अपनी सुरक्षा का भी ध्यान रखें। हमेशा दस्ताने, मास्क और लाइफ जैकेट जैसे सुरक्षा उपकरण पहनें।

शारीरिक संरचना

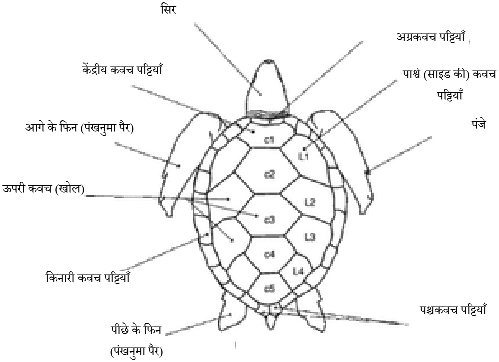

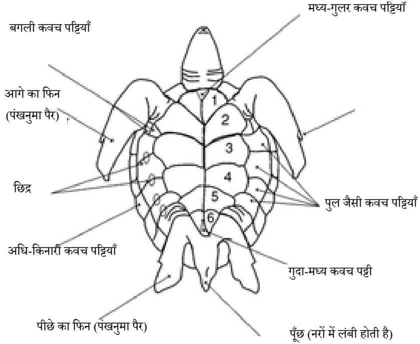

ecomarbelize.org

समुद्री कछुए की प्रजातियों की पहचान

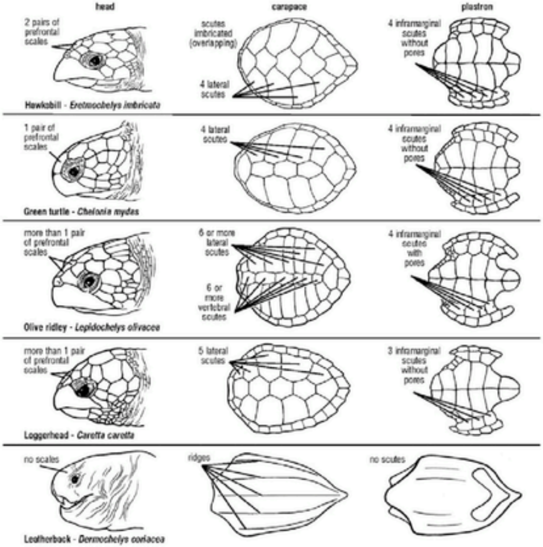

मृत कछुओं का निपटान

- मृत कछुओं का निपटान यथासंभव कम से कम परिवहन के साथ किया जाना चाहिए।
- शव को उच्च ज्वार रेखा (High Tide Line) से काफी ऊपर दफनाना चाहिए।
- यदि दफनाना संभव न हो, तो शव की फ्लिपर (फिन) के आधार पर नायलॉन की मजबूत डोरी बाँध दें, ताकि यदि शव दोबारा बाहर आ जाए तो पहचान की जा सके।
- छोटे और मध्यम आकार के कछुओं के लिए कम से कम 4 फीट गहरा गड्ढा खोदें, और बड़े कछुओं के लिए 6 से 8 फीट गहरा गड्ढा, ताकि शव फिर से सतह पर न आ सके (मानव हस्तक्षेप या गिद्ध/अन्य खुदाईकर्ता द्वारा)।
- कचरा प्रबंधन: इस्तेमाल किए गए दस्ताने, औज़ार या अन्य संक्रमित सामग्री को उचित तरीके से नष्ट करें।

परिवहन

- कछुए को ले जाते समय उसे ज्यादा हिलाएँ-डुलाएँ नहीं।
- उसके घायल हिस्सों पर दबाव या खिंचाव न पड़े, इसका ध्यान रखें।
- अच्छी वेंटिलेशन (हवादार) वाले वाहन का प्रयोग करें, जिसमें 2-इंच मोटा फोम बिछा हो, ताकि कछुए को चोट न लगे।
- वाहन के अंदर का तापमान 20 – 30°C के बीच बनाए रखें।

विनियम और कानून

भारत में समुद्री कछुओं के संरक्षण से जुड़े कानून

- वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम – 1972
- CITES (अंतरराष्ट्रीय संधि) का अनुमोदन – 1976
- बॉन कन्वेंशन का अनुमोदन – 1981
- पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम – 1986
- जैव विविधता अधिनियम – 2002
- वन्यजीव संरक्षण संशोधन अधिनियम – 2002
- समुद्री मत्स्य नीति – 2004
- समुद्री मत्स्य (विनियमन एवं प्रबंधन) विधेयक – 2009
- तटीय विनियमन क्षेत्र अधिसूचना – 2011
- राज्य स्तरीय मत्स्य नीतियाँ और कानून

भारत में पाई जाने वाली सभी पाँच प्रजातियाँ समुद्री कछुओं की, वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972 की अनुसूची-I और CITES कन्वेंशन के परिशिष्ट-I के अंतर्गत कानूनी रूप से संरक्षित हैं। इसके अंतर्गत समुद्री कछुओं और उनसे बने किसी भी उत्पाद के व्यापार पर पूर्ण प्रतिबंध है।

किनारे पर फँसने के कारण

- **जाल में फँसना**: समुद्री कछुए जब मछली पकड़ने वाले जाल में फँस जाते हैं, तो अक्सर साँस नही ले पाते हैं या उनकी गंभीर चोट लग जाती है। इसके कारण वे किनारे पर मृत या घायल अवस्था में पहुँच जाते हैं।
- **प्लास्टिक निगलना:** प्लास्टिक कचरा निगलने से कछुओं की पाचन प्रणाली रुक सकती है। इससे उनकी हालत बिगड़ जाती है और वे कमजोर होकर तट पर बहकर आ जाते हैं।
- **नाव से टकराना**: नावों से टकराने पर कछुओं को गंभीर चोट लग सकती है, जिससे वे अक्सर समुद्र तट पर आ जाते हैं।
- **परजीवी का भार:** शरीर पर अधिक परजीवी होने से कछुए कमजोर हो जाते हैं। उनकी सेहत और गतिशीलता पर असर पड़ता है और वे आसानी से किनारे पर फँस जाते हैं।
- **फेफड़ों में संक्रमण** : श्वसन तंत्र के संक्रमण से कछुए की तैरने और गोता लगाने की क्षमता प्रभावित हो जाती है। इसके चलते वे बहकर तट पर आ जाते हैं।

मृत कछुए को संभालना

- मृत कछुए को छूते या हटाते समय दस्ताने और मास्क अवश्य पहनें, ताकि किसी भी संभावित जानवर से मनुष्य में फैलने वाली बीमारी का संक्रमण न हो।
- यदि संभव हो तो शव को उच्च ज्वार रेखा (High Tide Line) से दूर, कम भीड़ वाले और छायादार स्थान पर ले जाएँ।
- यदि शव धूप में पड़ा हो, तो उसे छाँव में रख दें या ढक दें।
- शव को छूते या स्थानांतरित करते समय हमेशा दस्ताने पहनें।

जीवित कछुए को संभालना

- कछुए को छुते-पकड़ते समय दस्ताने पहनें, क्योंकि समुद्री जीवों से बीमारियाँ फैल सकती हैं।
- भीड़ को शांत रखने की कोशिश करें और भीड़ कम करें, क्योंकि पहले से ही परेशान कछुआ डर सकता है और घबरा सकता है।
- अगर कछुए को चोट लगी है तो ध्यान से देखें और रिपोर्ट करें।
- कछुए को उल्टा न करें और उसकी फ्लिपर (फिन) को खींचकर जाँच न करें।
- कछुए को हमेशा साफ, गर्म, सूखी और सुरक्षित जगह पर रखें।
- फँसे हुए कछुए को उसके नाक से ऊपर तक के पानी में न डालें।
- कछुए की आँखों में टॉर्च या कैमरे की फ्लैश मत मारें।
- किसी भी कछुए को विशेषज्ञ से परामर्श किए बिना समुद्र में न छोड़ें।

रिपोर्टिंग / सूचना देना

- कछुए की सूचना सबसे पहले स्थानीय वन विभाग को दें।
- कछुए की फोटो दोनों साइड से और ऊपर से लें। पास में पेन जैसी चीज़ रखें ताकि उसका आकार समझ आ सके।
- फोटो जियो-टैग्ड (Geotagged) होनी चाहिएं ताकि फोटो से जगह (लोकेशन) की जानकारी भी मिल सके।
- एक फोटो ऐसी ज़रूर लें जिसमें पूरा कछुआ साफ दिखे और कोई हिस्सा कटा हुआ न हो।

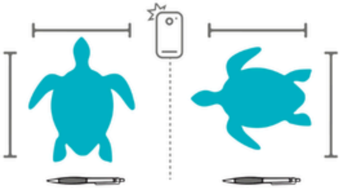

कछुए का पोस्ट मॉर्टम (मरणोपरांत जाँच)

- पोस्ट मॉर्टम से न सिर्फ मौत का कारण पता चलता है, बल्कि यह भी समझ आता है कि कछुए कहाँ रहते थे, उनकी सेहत कैसी थी और उन पर कौन-से खतरे थे।
- कोशिश करें कि पोस्ट मॉर्टम उसी समुद्र तट पर किया जाए, जहाँ कछुआ मिला हो।
- अगर मौसम खराब हो तो कछुए को ऐसी जगह ले जाएँ जहाँ उसे सुरक्षित रखा जा सके, जब तक कि उसका पोस्ट मॉर्टम न हो जाए।
- जाँच के लिए नमूने– ऊतक (Histopathology) फॉर्मेलिन में और डीएनए एथेनॉल में इकट्ठा करें।

पोस्ट मॉर्टम किट

क्र. सं.	वस्तु	संख्या
1.	स्टेराइल ब्लेड्स	6
2.	स्कैल्पेल हैंडल	2
3.	सर्जिकल सिज़र्स	1
4.	आर्टरी फोर्सेप्स	1
5.	चाकू (बड़ा, मध्यम, छोटा)	3
6.	रिब कटर	1
7.	मेज़रिंग टेप	2
8.	पेन / परमानेंट मार्कर	2
9.	मास्क	10
10.	दस्ताने	10
11.	नॉर्मल सलाइन	1
12.	सैंपल कप्स (70% एथेनॉल, NS और 10% फॉर्मेलिन से भरे हुए)	3
13.	स्टेराइल स्वैब्स (पेप्टॉन, एनएस, केरी ब्लैयर)	3
14.	सिरिंज (5ml)	2
15.	ज़िपलॉक बैग	4
16.	शार्प्स बॉक्स	1
17.	डस्टबिन (3 कचरे की थैलियों सहित)	1
18.	फावड़ा	2
19.	हाथ साफ करने का सैनिटाइज़र और साबुन	1